

“ओटन गए कपास, जुलाहे से लटठम् लटड़ा” सरिता, जागोरी

खाद्य एवं आपूर्ति विभाग द्वारा जे. जे. कलस्टर बवाना, नई दिल्ली में 16 दिसंबर 2006 को एक शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में खाद्य आपूर्ति विभाग के उच्चतम अधिकारी- आयुक्त श्रीमति नूतन गुहा बिसवास, सर्कल सलाहकार समिति सदस्य, नागरिक निगरानी समिति सदस्य और स्वयं सेवी संस्थाओं के सदस्यों, जागोरी व बवाना निगरानी समिति ने शिरकत की।



शिविर के बारे में खाद्य संभरण विभाग ने काफी प्रचार प्रसार किया था। समाचार पत्रों में भी बार-बार जानकारी दी जा रही थी। इन विज्ञापनों के अनुसार शिविर का उद्देश्य राशन कार्ड धारकों की बुनियादी समस्याओं को सुनना और स्वयं सेवी संस्थाओं/आर.डब्ल्यू.ए. के साथ खबरू होना था। आम जनता की खाद्य संबंधी दिक्कतों को सुनने और उनके अधिकारों के बारे में जानकारी देने का था। विज्ञापन के जरिये लोगों के दिलों दिमाग में उम्मीद जागी कि इस शिविर के से उन्हें कछ राहत मिल पाएगी।

समस्याओं का समाधान हमसे पायें, चिन्ता और परेशानी दूर भगायें.



क्या उपभोक्ता थका ही ?

क्या आप थका हुआ महसूस करते हैं? क्या आप अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकते हैं? क्या आप अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकते हैं?

1. क्या आप अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकते हैं?
2. क्या आप अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकते हैं?
3. क्या आप अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकते हैं?

- क्या आप अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकते हैं?
- क्या आप अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकते हैं?
- क्या आप अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकते हैं?

क्या आप स्टॉफ़ के व्यवहार से थका हैं ?

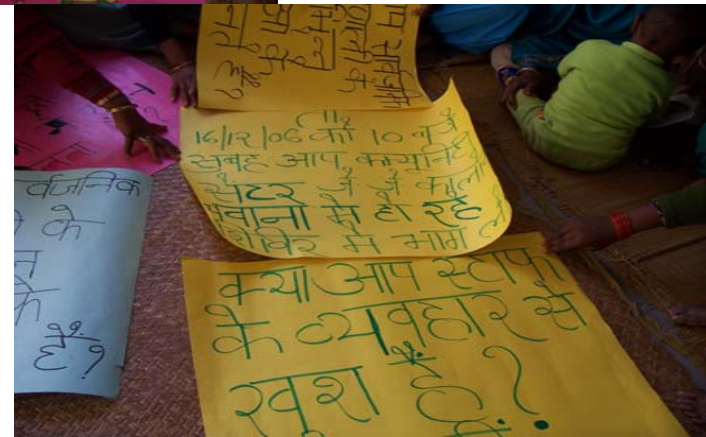
क्या आपका बॉस भी थका हुआ है? क्या आपका बॉस भी थका हुआ है? क्या आपका बॉस भी थका हुआ है?

क्या आपका बॉस भी थका हुआ है? क्या आपका बॉस भी थका हुआ है? क्या आपका बॉस भी थका हुआ है?



पोस्टर कार्यशाला

शिविर का फायदा हर कोई ले पाए इस सोच के साथ हम लोगों ने शिविर के प्रचार प्रसार हेतु हमने निगरानी समीति और लड़कियों के साथ पोस्टर कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें शिविर सूचना संबंधित पोस्टर बनवाए। इस कार्यशाला में लड़कियों और महिलाओं ने अपनी मन की बात रंगों और ब्रुश के माध्यम से पोस्टरों में संजोई। इन पोस्टरों को इलाके की गलियों व अन्य जगह जानकारी फैलाने के उद्देश्य से महिलाओं ने अपने इलाके में चिपकाए जिससे ज्यादा से ज्यादा लोगों को शिविर की सूचना मिले और लोग अपनी भागीदारी निभा सकें।



गली मीटिंग

हर ब्लॉक में गली मीटिंगों के द्वारा शिविर की जानकारी के साथ साथ राशन से संबंधित समस्याओं पर भी मीटिंग हुई। गली मीटिंग में चर्चा के दौरान लोगों ने बताया कि उन्हें राशन से संबंधित कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। राशन में धांधली, कम राशन दिया जाना, मिलावट, राशन की अनियमितता, मापक यंत्र ठीक नहीं होना, कार्ड का सही समय पर नहीं बनना और सही जानकारी नहीं मिलना, आदि समस्याओं का जिक्र किया। एकल महिला व विकलांग महिला भी थीं जिनके कार्ड खो जाने और फिर ना बनने की समस्या भी निकल कर आई।



बवाना ई ब्लॉक में अग्निकांड

जे.जे. कोलोनी बवाना के निवासियों की सन 2007 की शुरूआत खुशनुमा नहीं रही। हम लोग घर घर जाकर लोगों को कैंप में शामिल होने के लिए जानकारी दे रहे थे। इसके लिए लोगों से जाकर बातचीत, गली मीटिंग और निगरानी समिति के साथ साप्ताहिक बैठकों के बारे में बता रहे थे। इसी दौरान 06/12/2006 बवाना के ई ब्लॉक में भीषण आग लगने के कारण लगभग 326 परिवार प्रभावित हुए। सर्वे द्वारा मिली जानकारी के अनुसार 11 लोगों के राशन कार्ड जल गए थे। ग्यारह लोगों के डुप्लीकेट राशन कार्ड के लिए पुलिस स्टेशन में जाकर एफ.आई. आर. दर्ज करवाने में हमने मदद की। सबसे बड़ी ताज्जुब की बात है कि आग में लोगों का सब कुछ जल गया था। ऐसे में लोगों को सौ रुपये के स्टैम्प पेपर में सत्यापित करके देना था कि उनका घर जल जाने के कारण राशन कार्ड आग की चपेट में आ गया है। सब कुछ गंवा देने वाले लोगों से क्या इस तरह रूपयों की मांग की जानी चाहिए? अगर आपदा में कार्ड जल जाने/खो जाने वाला समस्या आती है तो डुप्लीकेट राशन कार्ड बनवाने की क्या प्रक्रिया है इस बारे में लगातार राशन दफतर में चक्कर लगाकर भी कार्ड बनवाने की प्रक्रियाओं के बारे में अधूरी जानकारी दी गई। पूरी विस्तृत जानकारी पाने के लिए बवाना के लोगों ने सूचना के अधिकार के तहत एप्लीकेशन डाली जिससे उन्हें संदर्भ विभाग से जानकारी प्राप्त हो सके।



निगरानी समिति

बवाना में महिलाओं का समूह जो निगरानी समिति नाम से जाना जाता है समुदाय में सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। निगरानी समिति इलाके की निगरानी करती हैं और अगर कहीं कोई समस्या आती है तो समस्या को साप्ताहिक बैठक में रखती है। बैठक में समस्या के निदान के लिए चर्चा कर उसमें से ठोस रणनितियों के साथ कार्रवाई करती है। जब निगरानी समिति की महिलाओं को पता चला कि उनके अपने इलाके में कैंप का आयोजन हो रहा है और उसमें उनकी राशन और राशन कार्ड के समस्याओं के बारे में सुनवाई होगी तो बहुत खुश हुईं। महिलाओं को लगा कि अब उनके पास अपनी बात रखने का एक ज़रिया है। जब उनसे हमने पूछा कि माईक पर बोलना होगा क्या आप बोलेंगी। महिलाओं का जवाब था, “क्यों नहीं ये तो हमारी अपनी समस्या है” अगर हम अब नहीं बोले तो कब बोलेंगे।



वे हमारे गीत को रोकना चाहते हैं

इस शिविर में अपने हकों के लिए बड़ चढ़कर बोलने वाली जनता और अन्य सरकारी अधिकारी दोनों ही मिलकर बेहद जोशिले माहौल में अपनी अपनी बातें बोलने को तैयार थे। खासतौर से निगरानी समिति की महिलाएं। निगरानी समिति की सदस्यों के लिए अपनी आप बीती कहने के लिए यह बहुत अच्छा मौका था। इस मौके को किसी भी कीमत में वे अपने हाथ से गंवाना नहीं चाहती थीं। इसलिए कैम्प वाले दिन जल्दी से अपना काम धाम जल्दी से खत्म कर तैयार होकर शिविर में अपनी बात रखने के लिए कार्यक्रम में अपनी टोली के साथ उपस्थित थीं। इस उम्मीद के साथ की इस शिविर में उनकी समस्याओं को सुना जाएगा और इनसे निपटने के लिए कुछ तय किया जाएगा। मगर उनका जोश निराशा में बदल गया। मंच पर कमिश्नर, एम एल ए व अन्य लोगों ने अपनी अपनी बात रखी पर जैसे ही निगरानी समिति की महिला ने अपनी बात रखने के लिए माईक थामा तो माईक का कनेक्शन काट दिया गया। हमारे बार बार पूछने पर, कि औरतों को क्यूं नहीं बोलने दिया जा रहा है, मंच संचालक इस सवाल का जवाब नहीं दे पा रहे थे।



मदद काउंटर

कैंप आयोजकों के अनुसार शिविर में समस्याओं को सुनने, शिकायतें दर्ज करने, फार्म वितरण, फार्म जमा कराना, कार्ड में नाम चढ़ना या हटाना, जो कार्ड बनकर तैयार हो गए हैं उनके वितरण आदि के लिए काउंटर होंगे उनमें जिम्मेदार अधिकारी होंगे जो लोगों को मदद उपलब्ध कराएंगे। मगर आश्चर्य की बात है शिविर में नियुक्त अधिकारियों को अपनी भूमिकाओं के बारे में स्पष्ट जानकारी एक दिन पहले शाम को दी गई थी।



कैंप के दिन कम्यूनिटी हॉल जहां पर मदद काउंटर उपलब्ध थे, वहां पर लोगों का तांता लगा हुआ था। रजिस्ट्रेशन काउंटर में लोग झुण्ड में राशन समस्या को लेकर आ रहे थे। कैंप में लोगों को कई समस्याओं से रूबरू होना पड़ा। कैंप के बारे में समाचार पत्रों में हर बार सुर्खियों में बताया जा रहा था। लोग बड़ी दूर दूर से धक्के खाते हुए पहुंचे थे। इतने लोगों को सम्भालने की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए थी जो कैंप में नहीं दिखाई दे रही थी। परेशान, हताश, बेहाल लोगों की भीड़ अपनी अपनी एप्लीकेशन को लेकर इधर उधर जाते दिखाई दे रही थी। लोगों की धक्का मुक्की, भीड़ के कारण काम नहीं हो पा रहा था। कैंप आयोजकों की तैयारी कितनी कच्ची थी, यह साफ पता चल रहा था। कुछ ही मिनटों में फार्म खत्म हो गए थे। लोगों की पृष्ठताछ को अधिकारी नज़रअंदाज कर रहे थे। बहुत लोग अलगा अलगा कोलोनियों से अखबार की मशहूरियों को पढ़कर बवाना में अपनी समस्या को लेकर आए थे। लेकिन उन्हें बताया गया कि ये कैंप सिर्फ बवाना निवासियों के लिए है। अंत में लोगों को धक्के मारकर बाहर निकालना गया। सभी अधिकारी अपनी-अपनी गाड़ी की धूल उड़ते हुए बवाना से निकल गए।



कैंप के बाद अपनी शिकायतें व आक्रोश के साथ लोगों की भीड़ जागोरी के दफ्तर में आ पहुंची। ऐसे में हमारे साथी एफ एस ओ के दफ्तर से फार्म लेकर आए और इन्हे भरने में लोगों की मदद की। हमारे फार्म मांगने पर अगले दिन हमें छ घंटे खड़े रहकर इंतजार करने के बाद ही फार्म मुहैया करवाए गए।



कैंप क्यों असफल रहा

हमारी नज़र में कैंप के असफल होने का सबसे बड़ा कारण विभागीय स्टाफ व लोगों के बीच की दूरी है। आश्चर्य की बात है कि अधिकारी लोगों की हताशा और राशन दुकान मालिकों के प्रति गुस्से को बिलकुल नहीं पहचान पाए। वादा था कि लोगों को अपनी बात रखने का मौका मिलेगा। लेकिन जब लोग कुछ अप्रिय सत्य रखने लगे तो उनका मूंह बंद कर दिया गया। कैंप आयोजकों के अनुसार लोगों के “अनूशासनहीनता” की वजह से ही कैंप असफल हुआ। ज़ाहिर है कि इस बारे में लोगों की सोच कुछ अलग है।

विभाग द्वारा इस केंप आयोजन की अगुवाई प्रशंसनीय है। हम उम्मीद करते हैं कि आगे भी ऐसे केंप हर क्षेत्र में हों जिनके आयोजन में बवाना के इस केंप के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए सुधार लाए जाएंगे। अपनी तरफ से हम इस केंप के अनुभव को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के साथ बांटना चाहते हैं ताकि वे इस जानकारी के जरिये खाद्य व आपूर्ति विभाग की कार्रवाईयों को समझ पाएं और अपने अधिकारों को हासिल कर पाएं।

केंप की गतिविधियों का विडियो दस्तावेजीकरण जागोरी द्वारा किया गया है। प्रतियों के लिए जागोरी से संपर्क करें।(www.jagori.org)